UG Semester-IV MJC-VII

Q:- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध के कारण एवं परिणामों का वर्णन करें। (Causes & Results of First Anglo-Maratha War: I)

Ans:- छत्रपति शिवाजी की मृत्यु के करीब 75 वर्षों के भीतर 18वीं सदी के मध्य में मराठों की सत्ता अपने शिखर तक पहुँच चुकी थी। मुगल साम्राज्य उस समय अत्यंत जर्जर हालत में था और 200 वर्षों से ऊपर के उस पुराने साम्राज्य के खण्डहरों से उत्पन्न होकर मराठों का साम्राज्य एक बार समस्त भारत पर फैलता हुआ मालूम होता था। 18वीं शताब्दी में तीन पेशवाओं — बालाजी विश्वनाथ (1713-20 ई०), बाजीराव प्रथम (1720-40 ई०) और बालाजी बाजीराव (1740-61 ई०) ने मराठा शक्ति के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। इन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप मराठे इतने शक्तिशाली हो गए कि वे मुगलों को पदच्युत कर दिल्ली पर कब्जा करने का स्वप्न देखने लगे, परन्तु इसी समय 1761 ई० में पानीपत के तृतीय युद्ध में पराजित होने से उनकी शक्ति को गहरी ठेस लगी। उस युद्ध के कुछ ही सप्ताह बाद बालाजी बाजीराव की मृत्यु हो गई। तदन्तर 1761 ई० में ही माधव राव पेशवा बना। उसने मराठों की

Scanned by CamScanner

खोई हुई शक्ति को बहुत हद तक पुनर्गठित कर दिया। निजाम, मैसूर, रुहेले, राजपूत, जाट - यहाँ तक कि मुगल बादशाह शाहआलम भी उनके प्रभाव में आ गया। उनकी बढ़ती हुई शक्ति से अंग्रेज सशंकित हो उठे और किसी सुयोग्य मौके की तलाश में रहने लगे, जिससे कि मराठों की शक्ति नष्ट की जा सके। वस्तुतः, वे मराठों-जैसी प्रबल भारतीय शक्ति के अस्तित्व को अपनी उन्नति में बाधक समझते थे। प्रसिद्ध इतिहासकार ग्रांट डफ लिखता है, "~~कम्पनी~~ The court of Directors were desirous of seeing the Marhattas checked in their progress, and would have beheld combinations of the other native powers against them with abundant satisfaction" [History of the Marhattas]

(कम्पनी के डायरेक्टर इस बात के इच्छुक थे कि मराठों की बढ़ती हुई सत्ता को किसी तरह धक्का पहुँचे, और यदि देश की दूसरी शक्तियाँ मराठों के खिलाफ मिल सकतीं, तो यह देख उन्हें बहुत

संतोष होता।]

अंग्रेजों के सौभाग्य से उन्हें शीघ्र ही इसका मौका मिल गया। 1772 ई० में माधवराव की मृत्यु के साथ ही मराठों में गृह-कलह आरंभ हो गया। माधवराव का छोटा भाई नारायण-राव पेशवा बना, परंतु 1773 ई० में उसकी हत्या करवाकर उसका चाचा रघुनाथ राव (राघोबा) पेशवा बन बैठा। राघोबा वीर किन्तु अदूरदर्शी था। वह महत्त्वाकांक्षी भी था, परंतु महत्त्वाकांक्षा ने उसकी नीतिज्ञता पर पर्दा डाल दिया था। इसलिए जब अंग्रेजों ने अपने मतलब के लिए मराठों की सत्ता को नष्ट करने का विचार किया, तब राघोबा आसानी से उनके हाथों की कठपुतली बन गया। नाना फड़नवीस का शक्तिशाली दल राघोबा का ~~विरोध~~ विरोधी था और वह सवाई माधवराव को पेशवा बनाना चाहता था। उसे अपने इस कार्य में सफलता ~~मिली~~। इस परिस्थिति से घबराकर राघोबा भागकर बम्बई अंग्रेजों की शरण में चला गया। अब वास्तविक रूप से अंग्रेजों को मराठा राजनीति में हस्तक्षेप करने का मनोवांछित मौका मिल गया।

Scanned by CamScanner

इसी पृष्ठभूमि में प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध के कारण छिपे हुए थे।

प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध के कारण

(1) अंग्रेजों का मराठों की फूट का लाभ उठाना ~~व~~ अपनी नीति निर्धारित करना — जब राघोबा माधवराव का संरक्षक था, तब अंग्रेजों ने राघोबा को बहकाना शुरू किया कि दक्षिण का सूबेदार निजामुलमुल्क मराठों पर आक्रमण करने वाला है। राघोबा की अदूरदर्शिता से पेशवा माधवराव और बम्बई के अंग्रेज गवर्नर के बीच संधि हो गई कि यदि निजाम मराठों पर हमला करे, तो अंग्रेज सेना और ~~[illegible]~~ अस्त्र-शस्त्र से मराठों की मदद करेंगे और इसके बदले में पश्चिमी तट पर सालसेट और बेसिन का किला दोनों पेशवा की ओर से अंग्रेजों को दे दिए जाएँगे। न निजाम ने मराठों पर हमला किया, न मराठों को अंग्रेजों की मदद की जरूरत हुई, और न सालसेट और बेसिन के किले अंग्रेजों को सुपुर्द किए गये, फिर भी इस संधि से अंग्रेजों

Scanned by CamScanner

पहुँच पेशवा-दरबार तक हो गयी और वे मराठों की अंदरूनी कमजोरियों का पता लगाकर मराठा-साम्राज्य के विरुद्ध अपनी नीतियों को क्रियान्वित करने में जुट गये। इस प्रकार, प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध के कारणों में अंग्रेजों की फूट डालने वाली नीतियों का भी विशेष योगदान था। ~~इसी~~ इन नीतियों ~~के अधीन प्र~~ का प्रमुख

(6) पहलू यह भी था कि अंग्रेज जानते थे कि यदि दक्षिण की तीन प्रमुख शक्तियाँ- निजाम, हैदर अली और पेशवा आपस में मिल गईं, तो दक्षिणी भारत से अंग्रेजों के अस्तित्व को आसानी से मिटा देंगी, इसलिए येन-केन-प्रकारेण, इन तीनों को एक-दूसरे से अलग रखना जरूरी था।

(2) सूरत की संधि- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध की जड़ में सूरत की संधि की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। राघोबा द्वारा बम्बई में अंग्रेजों की संरक्षणता लेने के पश्चात् अंग्रेज किसी न किसी तरह उसे ही पुनः पेशवा बनाने में अपना हित देखते थे। इसलिए बिना कलकत्ता कौंसिल की अनुमति लिए बम्बई कौंसिल ने राघोबा के साथ 7 मार्च, 1775 ई० को सूरत की संधि की।

Scanned by CamScanner